संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रों की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 11 ■ अंक : 72 ■ अगस्त 2025

धूम-धाम से मनाया गया 79वाँ स्वतंत्रता दिवस

जय-जयति सदा स्वाधीन 'हिंद'

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा मुख्यालय सहित सभी आठ क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा 79वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे तथा संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की उपस्थिति में मुख्यालय पर विधिवत झंडारोहण किया गया। इस अवसर पर मुख्यालय में विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए वहीं क्षेत्रीय केंद्रों पर भी स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में प्रातः 7:15 बजे से 8:30 बजे तक प्रो. सुरेन्द्र दुबे, माननीय उपाध्यक्ष केंद्रीय हिंदी शिक्षण मण्डल, आगरा एवं प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता एवं कुशल नेतृत्व में संस्थान के विभिन्न संकायों में प्रवेशित देशी और विदेशी 350 विद्यार्थियों तथा मुख्यालय आगरा के शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्यों द्वारा देशभक्ति के गीत गाते हुए तथा नारे लगाते हुए, संस्थान से खंदारी चौराहे तक प्रभात फेरी

निकाली गई। तदुपरांत 8:30 बजे हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष तथा संस्थान के निदेशक की उपस्थिति में ध्वजारोहण समारोह संपन्न हुआ। ध्वजारोहण समारोह के पश्चात् संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। सभी अतिथियों का स्वागत उत्तरीय एवं स्मृति चिह्न देकर किया गया। अतिथियों द्वारा ललित कला अकादमी की ओर से राष्ट्रीय

संस्थान परिसर से खंदारी चौराहे तक निकाली प्रभातफेरी

सम्मान प्राप्त करने वाले डॉ. विजय एम. ढोरे, आई.सी.सी.आर. के प्रोजेक्ट के लिए डॉ. मंयक त्रिपाठी, डॉ. शिल्पी कुमारी, डॉ. दीपामणी वरूआ तथा सफाई कार्मिक सोनू को उसके कार्य के प्रति समर्पण के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में शैक्षिक समन्वयक, प्रो. हरिशंकर ने संस्थान के सभी शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्यों, कार्मिकों, स्वदेशी एवं विदेशी विद्यार्थियों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं।

निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कार्यक्रम को सानिध्य प्रदान करते हुए अपने उद्बोधन में सभी देशवासियों एवं संस्थान के सभी सदस्यों को 79वें स्वतंत्रता दिवस की बधाई देते हुए कहा कि हर्ष की बात है कि जातीय भेद-भाव, भाषाई-अस्मिता, लिंग-भेद आदि को तिलांजलि देते हुए संस्थान परिवार द्वारा जोश, उल्लास एवं नई उमंग और तरंगके साथ स्वतंत्रता दिवस का शुभारंभ

शेष पृष्ठ 6 पर

समस्त भारतवासियों को एकता के सूत्र में

जोड़ने का काम करती है हिंदी : निदेशक

नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा दिनांक 06.08.2025 से 22.08.2025 तक जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डाइट आईजोल, मिजोरम के डी.एल.एड. पाठ्यक्रम के 57 प्रशिक्षणार्थियों हेतु हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम संचालित किया गया। पाठ्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 06.08.2025 को प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि, हिंदी जोड़ने का कार्य करती है, हिंदी दो राज्यों के बीच मध्यस्थता का कार्य करती है। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

डाइट आईजोल मिजोरम से पधारीं व्याख्याता सुश्री ललरिनत्वांगी छड़ते, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे, अनुसंधान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रो. सपना गुप्ता ने प्रशिक्षण में हिंदी से संबंधित प्राप्त होने वाले ज्ञान के बारे में जानकारी प्रेषित की। उन्होंने कहा कि हिंदी को सीखने का सबसे बेहतरीन उपाय बाजार में दुकानदारों से हिंदी भाषा में वार्तालाप करना है और हिंदी को अपने संप्रेषण का सशक्त माध्यम बनाना है। 02 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अभिमत अनुभव प्रेषित किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा किया गया।

शेष पृष्ठ 6 पर

सर्वश्रेष्ठ शोध-पत्र

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित (विजन विकसित, भारत @2047) 'अटल (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित ट्यूटोरियल ऐप फॉर लर्निंग) डिजिटल ऐपः ग्रामीण पूर्वोत्तर भारत में माध्यमिक विद्यालय के बच्चों के लिए डिजिटल सशक्तिकरण पहल' के अंतर्गत डॉ. शिल्पी कुमारी (परियोजना समन्वयक) एवं श्री भानु प्रताप राणा (शोध सहायक) द्वारा इमरजिंग एआई एप्लीकेशन फॉर लिगल सेल्फ हेल्प इन इंडिया विषय पर तैयार किया गया शोध पत्र अमीटी यूनिवर्सिटी, छत्तीसगढ़ द्वारा इंटरशेक्शन ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड लॉ विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मलेन में दिनांक 21/08/2025 को प्रस्तुत किया गया। इस सम्मेलन में शोध पत्र प्रस्तुति के लिए तकनीकी सत्र 8 के अंतर्गत उन्हें सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र की उपाधि प्राप्त हुई है।

भारत एक भूखण्ड नहीं अपितु भावमूलक देश

अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष, प्रो. चंद्रकांत कोठे ने अतिथि प्रो. बाबूराम, (सेवानिवृत्त), हिंदी विभाग, चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवाणी, (हरियाणा) का स्वागत किया तथा संस्थान एवं विभाग का परिचय दिया।

मुख्यअतिथि एवं विशेषज्ञ वक्ता प्रो. बाबूराम ने अपने विशेष वक्तव्य में कहा कि भूमंडलीकरण, बाजारीकरण जैसे प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परंपरा को समझना चाहिए। उन्होंने बताया कि भारत दो शब्दों से मिलकर बना है। भारत (भा+रत) जिसका अर्थ है ज्ञान में लीन रहना। भारत एक भूखण्ड नहीं अपितु भावमूलक देश है।

उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान संपदा विभिन्न वेदों, उपनिषद, पुराणों, लौकिक साहित्य, विज्ञान, रसायन, व्याकरण, काव्यशास्त्र आदि के क्षेत्र में भी देखने को

मिलती है। भारत देश की संस्कृति विश्व की पहली संस्कृति है जिसने विश्व को ज्ञान दिया है। उन्होंने ऋग्वेद को विश्व की पहली पुस्तक बताते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा का पहला स्त्रोत और मानवता की धरोहर बताया। उन्होंने वैदिक शिक्षा (गुरुकुल प्रणाली) को उपनिषदों की शिक्षा बताते हुए तैत्तिरीयोपनिषद में ज्ञान की पाँच बातें - अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश को महत्वपूर्ण बताया।

उन्होंने चरक और सुश्रुत को विश्व का सबसे बड़ा सर्जन, आर्यभट्ट, वराहमिहिर को सबसे बड़ा गणितज्ञ और विश्वकर्मा को विश्व का प्रथम इंजीनियर बताया। उन्होंने बताया कि पशुपालन,

भारतीय ज्ञान परंपरा विषय पर विशेष व्याख्यान

कृषि, आयुर्वेद, प्रशासन, नीति और इतिहास में भी हमारा देश महत्वपूर्ण रहा है। पाणिनि द्वारा लिखित अष्टाध्यायी ग्रंथ और कोटिल्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथों का पूरे विश्व में कोई मुकाबला नहीं है। उन्होंने कहा कि भारतीय महंत, संत और विद्वान भारतीय ज्ञान परंपरा के संवाहक रहे हैं।

विभागाध्यक्ष, प्रो. चंद्रकांत कोठे अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि केंद्रीय हिंदी संस्थान पूरे भारत और विश्व को जोड़ने का काम कर रहा है। यह सामाजिक समरस्ता का प्रतीक है। ज्ञान परंपरा के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए प्रो. कोठे ने कहा कि प्राचीन काल से चली आ रही भारतीय ज्ञान परंपरा आज भी विज्ञान, चिकित्सा, गणित अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

व्याख्यान कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सरोज राय ने किया।

अंगामी लोक साहित्य कार्यशाला

'अंगामी लोक साहित्य' द्वितीय कार्यशाला दिनांक 01.08.2025 से 02.08.2025 अपने कार्यक्षेत्र 'कोहिमा नगालैण्ड में विद्वानों/ विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में डॉ. वित्योलेन्यो लिडिया द्वविछा, डॉ. बृजेश कुमार, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, नगालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा परिसर, मेरी द्धविछा, लोक साहित्य विशेषज्ञ, कोहिमा, नगालैंड, खोनुओ लिएजिएत्सु, विशेषज्ञ, कोहिमा, नगालैण्ड, श्रीमती निकेर्धोन्यो, मौखिक लोक कथाओं की संग्रहकर्ता एवं पारंपरिक ज्ञान विशेषज्ञ, नगालैण्ड, विशेषज्ञों ने भाग लिया।

डिजिटल सशक्तिकरण के लिए ऑनलाइन कार्यशाला

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई.सी.एस.एस.आर) द्वारा वित्तपोषित विजन विकसित भारत @2047 के तहत 'अटल (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित ट्यूटोरियल ऐप फॉर लर्निंग) डिजिटल ऐप' परियोजना के लिए 22 अगस्त, 2025 को एक दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य पूर्वोत्तर भारत (ग्रामीण) के विद्यार्थियों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के लिए अटल एआई वेब ऐप के प्रोटोटाइप विकास पर विशेषज्ञों के सुझाव प्राप्त करना था।

कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. संदीप पॉल (भौतिकी एवं कंप्यूटर विज्ञान विभाग, दयालबाग शैक्षणिक संस्थान, आगरा), प्रो. प्रेम शरण सुधीश (भौतिकी एवं कंप्यूटर विज्ञान विभाग, दयालबाग शैक्षणिक संस्थान, आगरा), डॉ. लोतिका सिंह (भौतिकी एवं कंप्यूटर विज्ञान विभाग, दयालबाग शैक्षणिक संस्थान, आगरा), श्री नितीश सिंह (डाटा प्रबंधक, टी.आई.एच. फाउंडेशन फॉर आईऑटी एंड आईओई), श्री शौर्य सुमन (एक्सेंचर गुरुग्राम डेसिगनेशन टीम लीड) ने भाग लिया। कार्यशाला में बाह्य संस्थानों से परियोजना निदेशक के रूप में प्रो. दिनेश शर्मा और आन्तरिक सदस्य के रूप में प्रो, चंद्रकांत कोठे, डॉ. शिल्पी कुमारी, डॉ. मयंक त्रिपाठी, डॉ. अवनीश कुमार, श्री भानु प्रताप राणा, हिंदी शिक्षण निष्णात तृतीय सेमेस्टर के सभी विद्यार्थी, डॉ. आकाश भदौरिया, श्री अनुज पाल तथा श्री अजय कुमार आदि ने कार्यशाला में भाग लिया।

राई लोक साहित्य

'राई लोक साहित्य' की सामग्री चयन, संकलन हेतु द्वितीय कार्यशाला दिनांक 28.08.2025 से 30.08.2025 तक अपने कार्यक्षेत्र राईखीम, लुम्से, 5 माइल, तांदोग गांतोक (सिक्किम) में विद्वानों/विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में डॉ कर्ण बहादुर राई ए.टी बी ओ. राई भाषा, प्रशाखा सिक्किम (संपादक) श्री अरुण कुमार राई ए.टी बी ओ. राई भाषा, प्रशाखा, डॉ. छुकी लेप्चा, समन्वयक हिंदी, डॉ. सोनाम ओंगम् भूटिया, हिंदी पी.जी.टी., भाषाएँ, शिक्षा विभाग (हिंदी संपादक), श्रीमती शोभा शर्मा, डी.ई.ओ. (टेक्निकल एसिस्टेंट) भाषा प्रशाखा, शिक्षा विभाग ने भाग लिया।

गणपति स्थापना एवं विसर्जन

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के अंतरराष्ट्रीय अटल बिहारी वाजपेयी सभागार के प्रांगण में गणेश चतुर्थी का आयोजन अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा किया गया, जिसमें संस्थान के निदेशक महोदय प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी, सभी विभाग के विभागाध्यक्ष, संस्थान के सभी अध्यापक एवं प्रशासनिक वर्ग तथा स्वदेशी-विदेशी विद्यार्थी उपस्थित हुए।

प्रारंभ में गणेश जी की प्रतिमा की स्थापना की गई उसके पश्चात् योग शिक्षक अरविंद शुक्ला ने मूर्ति स्थापना में पूजा कार्य संपन्न करते हुए मंत्रोचारण के साथ गणेशजी की कथा प्रसंग को सुनाया। निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने गणेश जी की प्रतिमा को जनेऊ, वस्त्र और माला पहनायी। गणेश वंदना के बाद सभी शिक्षक एवं प्रशिक्षणार्थियों ने आरती की जिसके पश्चात अंत में सभी को प्रसाद वितरण किया गया।

संध्या को 7 बजे पुनः भगवान की आरती की गई जिसमें संस्थान के निदेशक सहित अध्यापक शिक्षा विभाग एवं सूचना एवं भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष शिक्षक एवं स्वदेशी-विदेशी छात्र सम्मिलित रहे। अगले दिन दिनांक 28-08-25 को विसर्जन का कार्यक्रम बड़े धूमधाम से संस्थान के सभी विद्यार्थियों, शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्यों द्वारा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रसाद के रूप में सबकों मोदक वितरित किया गया। उसके बाद निदेशक प्रो. कुळकर्णी के नेतृत्व में गणपति मूर्ति को विसर्जन के लिए यमुना घाट पर ले जाया गया। उक्त कार्यक्रम प्रो. चंद्रकांत कोठे, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग के नेतृत्व में तथा डॉ. प्रणीता मिश्रा (संयोजक, सांस्कृतिक कार्यक्रम) एवं डॉ. राजश्री (सह संयोजक, सांस्कृतिक कार्यक्रम) के सहयोग से संपन्न हुआ।

राष्ट्रीय काव्यधारा कवि सम्मेलन

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में केंद्रीय हिंदी संस्थान के अटल बिहारी वाजपेई अंतरराष्ट्रीय सभागार में 'राष्ट्रीय काव्यधारा कवि सम्मेलन' संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रोफेसर सुनील बाबूराव कुळकर्णी ने की।

इस काव्य सम्मेलन में देशप्रेम के अलावा विभिन्न विषयों पर आधारित नवरसों से ओतप्रोत काव्य पाठ हुआ। इस काव्य सम्मेलन में राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कवि पवन आगरी ने हास्य रंग, शशांक प्रभाकर ने समाज रंग, रामेंद्र कुमार ने ब्रज रंग, डॉ.पुरुषोत्तम पाटील ने देश रंग, कवयित्री भूमिका जैन ने गीत रंग, डॉ. शुभदा पाण्डेय ने लोक रंग, रमेश पंडित ने जीवन रंग, डॉ. त्रिमोहन तरल ने ग़ज़ल रंग और अंत में वरिष्ठ कवि रामेंद्र मोहन त्रिपाठी ने देशभक्ति के रंग जैसे विविध काव्य रंगों की छटा बिखेरकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम में संस्थान के समस्त विद्यार्थी, अध्यापक, अधिकारी कार्मिक उनके परिजन और शहर के रसिकजन बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. पुरुषोत्तम पाटील ने किया।

हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम

हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान, कटक, उड़ीसा के प्रवीण पाठ्यक्रम के 45 प्रशिक्षणार्थियों हेतु हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम का आयोजन 26.08.2025 से 12.09.2025 तक किया जा रहा है। जिसका उद्घाटन समारोह कार्यक्रम 26.08.2025 को निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में किया गया। इस मौके पर अपनी बात रखते हुए निदेशक ने कहा कि, हिंदी दो दिलों को जोड़ने का कार्य करती है। हिंदी हमारे समाज को संचालित करने का कार्य करती है। कार्यक्रम में उड़ीसा से पधारे सहायक प्रोफेसर डॉ. निरंजन बेहरा सर, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गप्ता, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे, अनुसंधान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति में सकुशल संपन्न हुआ। प्रो. सपना गुप्ता ने आगामी 18 दिनों से संबंधित जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिखा माहेश्वरी, असिस्टेंट प्रोफेसर, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान द्वारा किया गया।

भारतीय भक्ति साहित्य: कौशल विकास का विमोचन

नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग एवं पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय भक्ति साहित्य के माध्यम से कौशल विकास' विषय पर 21-22 मार्च 2025 को आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के निकष पर आधारित तथा संस्थान द्वारा संपादित प्रकाशित पुस्तक 'भारतीय भक्ति साहित्य कौशल विकास' का विमोचन 20.08.2025 को भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान शिमला के निदेशक प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी के कर कमलों द्वारा किया गया। पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में मंच पर केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी, शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, कुलसचिव डॉ. अंकुश औंधकर, पुस्तक की संपादक प्रो. सपना गुप्ता एवं सहयोगी डॉ. शिखा माहेश्वरी मंच पर उपस्थित रही।

संपादकीय

सुहावन है हिंदी का प्रौद्योगिकी सापेक्ष सफर

प्रिय पाठकों,

देशभर में 79 वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान के मुख्यालय आगरा सहित सभी क्षेत्रीय केंद्रों पर देशभक्ति से सराबोर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। आज जब हम अपनी आजादी का उत्सव मना रहे हैं तो गुजरे लगभग आठ दशकों में हासिल हुई अपनी उपलब्धियों पर गौरवान्वित होना स्वाभाविक है। हम सब जानते हैं कि लगभग 200 साल तक ब्रितानी उपनिवेशवाद का दंश झेलने के बाद देश शैक्षणिक और आर्थिक रूप से लगभग जर्जर अवस्था में पहुँच गया था। धार्मिक आधार पर हुए बँटवारे और उस क्रम में हुई हिंसा ने देश में अभूतपूर्व संकट खड़ा कर दिया था। अनेक गहन चुनौती से भरे माहौल में 15 अगस्त 1947 को भरतवंशियों ने सदियों के बाद स्वतंत्र माहौल में साँस लेते हुए सूरज की पहली किरणें देखी, वहाँ से नियति से मिलन की जो यात्रा शुरू हुई उसकी कुछ मंजिलें भले ही अभी भी दूर हों मगर हमने कई अहम मुकामों को हासिल करने में सफलता प्राप्त की है। आर्थिक रूप से हम दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर हैं। शैक्षिक तौर पर केंद्र की वर्तमान सरकार द्वारा लागू 'नई शिक्षा नीति 2020' अपने स्पष्ट नजरिया के साथ एक ऐसे शैक्षणिक मार्गदर्शक के रूप में उभर कर आई है जो हमें भविष्य में पुनः विश्व गुरु के पायदान पर पहुँचने का संकेत और संकल्प दे रही है। गौरवपूर्ण है कि अब तक 65 भाषाओं में अध्येता कोश तैयार कर चुका केंद्रीय हिंदी संस्थान हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं की समृद्धि के लिए शिक्षा में नवोन्मेष और नवाचार को लगातार बढ़ावा दे रहा है तथा सरकार की पहल पर वर्ष 2029 तक दुनिया का सबसे बड़ा डिजिटल शब्दकोश तैयार करने में प्राथमिकता के साथ जुटा हुआ है। इस क्रम में अगस्त के महीने में पाणिनी व्याख्यानमाला के तहत 'हिंदी में तकनीक' विषय के आलोक में विशेषज्ञ विद्वानों के साथ बृहद भाषा मॉडल तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बेहतर उपयोग के लिए गंभीर विमर्श आयोजित हुआ।

तकनीक ने भाषा के विकास को कई तरह से प्रभावित किया है, जिसमे भाषा की पहुँच बढ़ाना, सीखने के नए तरीके उपलब्ध कराना और डिजिटल दुनिया में भाषाओं को अधिक प्रासंगिक बनाना शामिल है। तकनीक ने भाषाओं को भौगोलिक सीमाओं से आगे बढ़कर वैश्विक हितधारकों तक पहुँचने में मदद की है। भारत सरकार ने मल्टीलिंग्वल कोर टेक्नोलॉजी के जरिए आधिकाधिक लोगों तक पहुँच बढ़ाने का खाका तैयार किया है।

हिंदी एक भाव भाषा है। यह भारतीय जीवन दर्शन को राष्ट्रीय संदर्भ में अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली निर्झरणी है। अनेकानेक भाषाओं, बोलियों और सभ्यताओं के इस पुंज को प्रेम, कर्म, करुणा और प्रकाश से भरने वाले अंतर्निहित केंद्र के रूप में हिंदी का लक्ष्य एवं पक्ष हमेशा से स्पष्ट रहा है।भारतीय भाषाओं के बीच समन्वय और संपर्क के सेतु के रूप में हिंदी का योगदान अप्रतिम है। कई बार व्यवस्था के बीच पनपी व्यथाओं को झेलते हुए घने कोहरे के बीच भी गुलाबी धूप की तरह हिंदी खिलखिलाती रही है। प्रेम के सौजन्य से ही सब को अपना बनती रही है। भाषाई तकनीकी विकास ने वैश्विक स्तर पर हिंदी को नया आयाम दिया है। कृतज्ञतर होती हुई हिंदी भाषा संभावनाओं का नया इतिहास रचने लगी है।

इंटरनेट, यूनिकोड, सोशल मीडिया, ब्लॉग आदि के माध्यम से स्क्रीनवाद के इस युग में हिंदी प्रयोग, प्रतिवाद, प्रखरता और प्रांजलता के रंग में सराबोर है। भाषा का विकास नवीनता के प्रति उसके आग्रह और उसके स्वभाव से होता है। भाषा का सामाजिक स्वरूप उसकी मूल चेतना कही जा सकती है। समसामयिक संदर्भ में कहें तो स्क्रीनवाद के इस युग में भाषा और प्रौद्योगिकी का विकास एक दूसरे पर अवलंबित हो गया है। जनसंचार माध्यमों के अनुसार तकनीकी रूप में ढलती हुई भाषाएँ लगातार प्रचारित प्रसारित एवं विकसित हो रही हैं। चूँकि तकनीक हमारे जीवन का एक हिस्सा हो गई है। ऐसे में हमारा भविष्य हमारे तकनीकी विकास का ही प्रतिरूप होगा यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'जय-जवान', 'जय-किसान', 'जय-विज्ञान' के साथ-साथ 'जय-अनुसंधान' की बात कही है। इस बात से हम समझ सकते हैं कि भविष्य की राह विज्ञान और अनुसंधान की रोशनी से जगमगाएगी। मौलिक चिंतन का वह स्वरूप जो समाज और देश की अपनी आवश्यकताओं के अनुसार हो, उसको प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है। 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है' लेकिन वे आवश्यकताएँ जो समाज और देश की सामाजिक, सामरिक आर्थिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक जरूरतों से जुड़ी हों उन्हें पहचान कर उनके लिए अनुसंधान के माध्यम से नए रास्ते तलाशना अधिक तर्कसंगत एवं समीचीन है। इस तरह का अनुसंधान मौलिक चिंतन से जुड़ा प्रश्न है। और यह सिद्ध है कि मौलिक चिंतन अपने परिवेश की भाषा अपनी मातृभाषा में ही संभव है।

सामंजस्य भाषाई अस्तित्व का मूल है। सामंजस्य और समन्वय में हिंदी बेजोड़ है। हिंदी का प्रौद्योगिकी सापेक्ष सफर उस रास्ते पर है जहाँ भोर की पहली किरण की तरह उम्मीद की आँखें चमकती हैं। शब्दों के खजाने से खुशबू के रंग बिखरते हैं और सारे अगर मगर 'धरे के धरे रह जाते' हैं। इंटरनेट की सघन आबादी में हिंदी अपनी गरिमा के साथ खड़ी है और आश्वस्त करती है मनुष्यता के उस ख्वाब के प्रति जो मनुष्यता से भी बेहतर है।

प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी
निदेशक

हिंदी प्रचार प्रसार के लिए संस्थान के दो विदेशी छात्र नामित

वर्ल्ड अर्गनाइजेशन ऑफ स्टूडेंट एंड यूथ (डब्ल्यू. ओ. एस. वाई.) द्वारा दिनांक 30-31 अगस्त, 2025 को आई.आई.टी., पटना में आयोजित विशेष कार्यक्रम के दौरान 'विदेशों में हिंदी प्रचार-प्रसार योजना' के अंतर्गत चयनित 02 विदेशी विद्यार्थियों को आमंत्रित किया गया।

संस्थान के निदेशक की अनुमति से सत्र 2025-26 के दोनों छात्र क्रमशः सुहैर अली (सीरिया), होवांग होवांग कीन्ह (वेयतनाम) को नामित किया गया है।

विद्यार्थियों के सहयोग हेतु विभाग में पदस्थ शैक्षिक सदस्य डॉ. परमान सिंह, सहायक प्रोफेसर को प्रतिनियुक्त किया गया।

संस्थान की विद्यार्थी को मिला दिल्ली वि.वि में प्रवेश

'विदेशों में हिंदी प्रचार-प्रसार योजना' के अंतर्गत सत्र 2024-25 में संस्थान की विद्यार्थी रहीं सुश्री पाबेल अपुहामिलेज जेनुदी देविनिया वीरारालाथे (श्रीलंका) दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के एम.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश पाने में सफल हुई हैं। उनकी इस सफलता के लिए संस्थान परिवार ने हार्दिक शुभेच्छा व्यक्त की।

हैदराबाद केंद्र

वैश्विक स्तर पर लगातार बढ़ रहा है हिंदी का दायरा : निदेशक

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा तेलंगाना राज्य के पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, गुरुकुल विद्यालय के माध्यमिक हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए 487वें नवीकरण पाठ्यक्रम का आयोजन दिनांक 04.08.2025 से 16.08.2025 तक किया गया है जिसका उद्घाटन समारोह दि. 04.08.2025 को संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने आभासी मंच के माध्यम से की। मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के पूर्व क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे, विशिष्ट अतिथि के रूप में एमजेपीटीबीसीडब्ल्यूआरईआईएस, मसबटैंक, हैदराबाद के संयुक्त सचिव डॉ. जी. तिरुपति उपस्थित रहे।

इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, अतिथि प्रवक्ता एवं डॉ. एस. राधा उपस्थित थीं। इस कार्यक्रम में कुल 59 (महिला-32, पुरुष-27) प्रतिभागियों ने सहभागिता कर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

487वें नवीकरण पाठ्यक्रम

उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने संबोधन में कहा कि मीडिया में हिंदी को लेकर जो स्थिति दिखाई जाती है वह सही नहीं है। हिंदी भाषा को लेकर आम-जनमानस एवं अध्यापकों में कोई असमंजस नहीं है। पिछले पच्चीस वर्षों में हिंदी केवल देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपना स्थान बना पाई है। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. गंगाधर वानोडे ने कहा कि अध्यापकों को अद्यतन रहना चाहिए। मूलभूत भाषा कौशल में सुनना, बोलना, पढ़ना तथातथा अभिव्यक्ति पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जी. तिरुपति ने कहा कि जीवन में हमें प्रकृति कुछ न कुछ सिखाती है उसी तरह कक्षा में भी बच्चों से हमें कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। बच्चों की त्रुटियाँ कैसे दूर की जाए यह शिक्षक को पता होना चाहिए। हिंदी शिक्षक को बोलते समय ज्यादातर हिंदी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

पाठ्यक्रम संयोजक एवं क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक ने कहा कि शिक्षक सच्चे अर्थों में राष्ट्र निर्माता होता है। कुम्हार की भांति छात्र रूपी कच्ची मिट्टी से भावी नागरिक तैयार करता है।

इस पाठ्यक्रम का समापन समारोह दि.16.08.2025 को संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अभासीय मंच के माध्यम से की।

मुख्य अतिथि के रूप में महात्मा ज्योतिबा फुले (गुरुकुल विद्यालय), तेलंगाना सरकार के पूर्व प्राचार्य श्री वी. रमण मूर्ति, विशेष अतिथि के रूप में एमजेपीटीबी सीडब्ल्यू आर ईआईएस, मसबटैंक, हैदराबाद के संयुक्त सचिव डॉ. जी. तिरुपति, एवं सम्मानित अतिथि केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र की पूर्व क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अनीता गांगुली उपस्थित रहीं।

इस कार्यक्रम का संचालन घोती गणेश एवं बी. मनीषा जैस्वाल द्वारा किया गया। आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन, कोंडागुर्ला डाईश्वर एवं शैक रफी द्वारा प्रस्तुत किया गया। अंत में राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

त्रिभाषा सूत्र से होगा भारतीय भाषाओं का विकास : डॉ. कर्नावट

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा आंध्र प्रदेश राज्य के पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, गुरुकुल विद्यालय के माध्यमिक हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए '488वें नवीकरण पाठ्यक्रम' का आयोजन दिनांक 18.08.2025 से 30.08.2025 तक किया गया है जिसका उद्घाटन समारोह दि. 18.08.2025 को संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने आभासी मंच के माध्यम से की। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा कॉरपोरेट कार्यालय, मुंबई डॉ. जवाहर कर्नावट, विशिष्ट अतिथि के रूप में उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. ऋषभदेव शर्मा, उपस्थित रहे। इस अवसर पर, केनरा बैंक, हैदराबाद के पूर्व सहायक महाप्रबंधक डॉ. वी. वेंकटेश्वर

राव, पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, अतिथि प्रवक्ता एवं डॉ. एस. राधा उपस्थित थीं। इस कार्यक्रम में कुल 41 (महिला-22, पुरुष-19) प्रतिभागियों ने कक्षा में उपस्थित होकर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि नई शिक्षा नीति में मातृ भाषा में पढ़ने और पढ़ाने की शुरूआत हुई है। यह स्वागत योग्य है। एक शिक्षक के अंदर बहु-कौशल होना चाहिए जैसा कि पूर्व काल

488वें नवीकरण पाठ्यक्रम का उद्घाटन व समापन समारोह

में चौसठ कलाएँ गुरुओं के पास होती थीं।

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जवाहर कर्नावट ने कहा कि उत्तर भारतीय लोगों से ज्यादा सौभाग्यशाली दक्षिण के लोग हैं क्योंकि उन्हें तीन भाषाएँ आती हैं। मातृभाषा के साथ-साथ हिंदी और अंग्रेजी भी इनके जीवन में सहायक भाषा के रूप में कार्य करती है।

त्रिभाषा का फार्मूला बहुत आवश्यक है इससे क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी को भी पूरे देश में फैलने में आसानी होगी। हिंदी का फलक बहुत बड़ा है। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने कहा कि हिंदी की जो दशा पूर्व काल में थी अब वैसी स्थिति नहीं है। वैश्विक स्तर पर हिंदी का बाजार बहुत बड़ा है। फिल्म पत्रकारिता और मल्टीमिडिया जैसे माध्यमें के कारण हिंदी आज अपने उच्चतम शिखर पर पहुच गई है। डॉ. वी. वेंकटेश्वर राव ने अपने उद्बोधन में कहा कि भाषा किसी भी संस्कृति की पहचान होती है। ज्ञान के विकास के लिए भाषाओं की आवश्यकता पड़ती है। अपने देश की भाषा हिंदी है और यहाँ के संस्कार सीखने के लिए सबसे पहले हिंदी सीखना पड़ता है।

इस पाठ्यक्रम का समापन समारोह निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में दि. 30.08.2025 को संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. भगवान गव्हाड़े ने हिस्सा लिया। पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, अतिथि प्रवक्ता एवं डॉ. एस. राधा उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन एस.के. नगेंद्र गुप्त एवं धन्यवाद ज्ञापन जी. अस्रतवली द्वारा प्रस्तुत किया गया।

154 वाँ एवं 155 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के क्षेत्रीय केंद्र-भुवनेश्वर द्वारा ओड़िशा राज्य के बरगड़ जिले के हिंदी शिक्षकों के लिए दि. 14.07.2025 से 25.07.2025 तक टाउन नोडल उच्च विद्यालय, बरगड़ में 154 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कुल 77 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। उद्घाटन समारोह में अध्यक्ष के रूप में संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक एवं पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. रंजन कुमार दास तथा मुख्य अतिथि के रूप में जिला शिक्षा अधिकारी, बरगड़, विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला विज्ञान पर्यवेक्षक, बरगड़, प्रधानाध्यापिका (टाउन नोडल उच्च विद्यालय, बरगड़) एवं अन्य सम्मानित अतिथि डॉ. चंद्र प्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ), डॉ. अरविन्द तिवारी (अतिथि प्रवक्ता, अनु.) उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। बरगड़ जिले के हिंदी शिक्षकों ने नवीकरण के आयोजन हेतु संस्थान का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन डोलामणि साहु, हिंदी शिक्षक द्वारा किया गया।

दिनांक 25.07.2025 को आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जिला शिक्षा अधिकारी, बरगड़, विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला विज्ञान पर्यवेक्षक, बरगड़ एवं अन्य सम्मानित मंचासीन अतिथि प्रधानाध्यापिका, टाउन नोडल उच्च विद्यालय, बरगड़ उपस्थित रहे। मंच संचालन डोलामणि साहु, हिंदी शिक्षक द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन अशोक नारंग, हिंदी शिक्षक द्वारा किया गया। ●

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के क्षेत्रीय केंद्र-भुवनेश्वर द्वारा ओड़िशा राज्य के सोनपुर जिले के हिंदी शिक्षकों के लिए दि. 22.07.2025 से 01.08.2025 तक 155 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम महाराजा उच्च विद्यालय, सोनपुर में आयोजित किया गया।

इसमें कुल 75 (22 महिला व 53 पुरुष) प्रतिभागी सम्मिलित हुए। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक एवं पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. रंजन कुमार दास ने की। मुख्य अतिथि के रूप में प्रधानाध्यापक (महाराजा उच्च विद्यालय, सोनपुर) एवं अतिथि प्रवक्ता डॉ. चंद्र प्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ) उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला।

सोनपुर जिले के हिंदी शिक्षकों ने नवीकरण के आयोजन हेतु संस्थान का आभार व्यक्त किया। क्षे.नि. डॉ. रंजन कुमार दास ने पाठ्यक्रम व संस्थान का परिचय देते हुए अध्यक्षीय टिप्पणी प्रस्तुत की। मंच संचालन भक्त राम मेहेर, हिंदी शिक्षक द्वारा किया गया।

दिनांक 01.08.2025 को आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास ने की।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रधानाध्यापक (महाराजा उच्च विद्यालय, सोनपुर), अतिथि प्रवक्ता डॉ. लक्ष्मीधर दाश (सेवानिवृत्ति प्राचार्य), डॉ. चंद्र प्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ), डॉ. अरविन्द तिवारी (अतिथि प्रवक्ता, अनु.) उपस्थित रहे। समापन समारोह में प्रतिभागियों ने नवीकरण से संबंधित अपने अनुभवों को व्यक्त किया।

अध्यापन कार्य डॉ. रंजन कुमार दास, डॉ. लक्ष्मीधर दाश, डॉ. चंद्र प्रताप सिंह एवं डॉ. अरविन्द तिवारी द्वारा किया गया। मंच का संचालन भक्त राम मेहेर, हिंदी शिक्षक द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन चंद्र शेखर महापात्र, हिंदी शिक्षक द्वारा किया गया। इस नवीकरण में विवेकानंद विश्वकर्मा (लिपिक, अनु.) द्वारा प्रतिभागियों के लिए पंजीकरण फॉर्म, प्रमाण-पत्र एवं निवृत्ति प्रमाण-पत्र, टीए/डीए फॉर्म, पुस्तकों की बिक्री तथा अल्पाहार की व्यवस्था की गई। ●

अहमदाबाद केंद्र

भाषाई और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, अहमदाबाद केंद्र द्वारा 12 से 25 अगस्त 2025 तक 'एम.टी. बी. आर्ट्स कॉलेज, सूरत में 'हिंदी भाषा संचेतना शिविर' का आयोजन किया गया। इस 'हिंदी भाषा संचेतना शिविर' में स्नातक के 71 छात्रों को निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रक्षिक्षण प्रदान किया गया। दिनांक 12 अगस्त 2025 को शिविर का विधिवत उद्घाटन हुआ जिसमें चेयरमैन श्री भरत शाह. एम. टी.बी. आर्ट्स कॉलेज एवं सार्वजनिक विश्वविद्यालय सूरत तथा सार्वजनिक एजुकेशन सोसाईटी सूरत, मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित रहे। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मुकेश पटेल,

हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. अंजना मेहता, डॉ. भावेश जाधव, डॉ. उषा परमार, डॉ. मनीषा चौधरी, तथा संकृत विभाग के शिक्षक सहित अन्य विभाग के शिक्षकों ने उपस्थित रहकर कार्यकम की गरिमा बढ़ाई। क्षेत्रीय निदेशक डॉ. सुनील कुमार ने पाठ्यक्रम का परिचय दिया। निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान, प्रोफेसर सुनील बाबुराव कुळकर्णी अध्यक्ष के रूप में ऑनलाईन संबोधन प्रदान कर प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया और 'हिंदी भाषा संचेतना शिविर' प्रशिक्षण पर विस्तार से प्रकाश डाला। भावेश जाधव, एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग, एम. टी.बी. आर्ट्स कॉलेज सूरत ने मंच का संचालन किया और डॉ. उषा परमार सहायक प्रोफेसर हिंदी विभाग एम. टी.बी. आर्ट्स कॉलेज सूरत ने आभार व्यक्त किया।

निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार शिविर में डॉ. सुनील कुमार द्वाराः भाषा, डॉ. अंजना मेहता द्वारा, 'एम.टी.बी. आर्ट्स कॉलेज, सूरत द्वारा देवनागरी लिपि की विशेषताएँ, डॉ. भावेश जाधव, द्वारा व्याकरण, डॉ. उषा परमार, द्वारा प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. मनीषा चौधरी,

हिंदी भाषा संचेतना शिविर

द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा और संस्कृति, विषयक अध्यापन कार्य किया गया।

दिनांक 25 अगस्त 2025 को शिविर के समापन समारोह में डॉ. मुकेश पटेल, प्राचार्य, एम. टी.बी. आर्ट्स कॉलेज सूरत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. भावेश जाधव, डॉ. उषा परमार, डॉ. मनीषा चौधरी, तथा संस्कृत विभाग के शिक्षक सहित अन्य विभाग के शिक्षको ने उपस्थित रह कर कार्यकम की गरिमा बढ़ाई। एसोसिएट प्रोफेसर भावेश जाधव, ने स्वागत संबोधन दिया तथा मंच का संचालन किया, वहीं सहायक प्रोफेसर डॉ. उषा परमार ने आभार व्यक्त किया। ●

मैसूर केंद्र

हिंदी भाषा संचेतना शिविर का आयोजन

दिनांक 21.07.2025 से 02.082025 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान, मैसूर केंद्र द्वारा प्रेसिडेंसी कॉलेज, शेषाद्रिपुरम कॉलेज, गाड्र्न सीटी विश्वविद्यालय तथा निटटे मिनाक्षी कॉलेज के स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों हेतु आयोजित 12 दिवसीय तृतीय हिंदी भाषा संचेतना शिविर का समापन दिनाँक 02.08.2025 को संपन्न हुआ। इस शिविर में कुल 51 विद्यार्थियों (26 छात्र एवं 25 छात्राएँ) ने सहभागिता की।

मालूम हो कि शिविर के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी ने की थी तथा अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने हिंदी संचेतना शिविर के उद्देश्य एवं लाभ के बारे में प्रतिभागियों को बताया।

शिविर के संयोजक एवं मैसूर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रणजीत भारती ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत एवं केंद्र का परिचय दिया।

समापन सत्र के दौरान प्रेसिडेंसी कॉलेज के भाषा विभाग की प्रमुख प्रो. शर्मिष्ठा वाजपेयी तथा हिंदी विभाग की डॉ. ललिता बी. एन. मंच पर उपस्थित थी।

औपचारिक स्वागत के बाद विद्यार्थियों द्वारा तैयार हस्तलिखित पत्रिका 'साहित्य

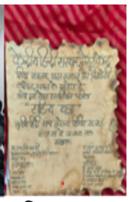

यात्रा' का विमोचन द्वारा किया गया। शिविर के विद्यार्थियों के लिए आयोजित पर-परीक्षण के परिणाम की घोषणा की गई और प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

प्रथम स्थान- एस. श्रीया, द्वितीय स्थान- रोशन सरीफ खान एवं तृतीय पुरस्कार- साक्षी सिंह को प्राप्त हुआ। पुरस्कार वितरण के बाद अतिथियों द्वारा सहभागी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र दिया गया।

मुख्य अतिथि के तौर पर बोलते हुए डॉ. शर्मिला बिस्वास जी ने कहा कि हमें अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए।

अंत में क्षेत्रीय निदेशक ने केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे, निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी के साथ-साथ केंद्र के सभी शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्यों को धन्यवाद अर्पित किया। ●

बहुआयामी है नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति : प्रो. मिश्र

191वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग द्वारा मेघालय राज्य के पूर्वी गारो हिल्स जिले, विलियमनगर के हिंदी शिक्षकों के लिए 191 वाँ हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम दिनांक 28.07.2025 से 09.08.2025 तक विलियमनगर, पूर्वी गारो हिल्स, मेघालय में आयोजित किया गया। पाठ्यक्रम के संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय तथा पाठ्यक्रम प्रभारी सहायक प्रोफेसर, डॉ. मयंक थे। इस पाठ्यक्रम में पूर्वी गारो हिल्स जिलेके विभिन्न विद्यालयों के 27 हिंदी शिक्षक प्रतिभागियों (15 पुरुष एवं 12 महिला) ने प्रतिभागिता की।

उद्घाटन समारोह में अध्यक्ष के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. विनोद कुमार मिश्र, डीन, कला संकाय, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान के शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरि शंकर एवं डॉ. बबली चौधरी, शिक्षा विभाग, नेहू ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में अतिथियों का स्वागत एवं परिचय के साथ प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रतिभागियों को अपने पूर्ण सामर्थ्य से हिंदी नवीकरण पाठ्यक्रम प्रशिक्षण का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। मुख्य अतिथि प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने अपने वक्तव्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के महत्व का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि केंद्रीय हिंदी संस्थान का हिंदी शिक्षण में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान है। विशिष्ट अतिथि प्रो. हरि शंकर ने अपने वक्तव्य में कहा कि नवीकरण पाठ्यक्रम महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी है। विशिष्ट अतिथि डॉ. बबली चौधरी ने कहा कि पूर्वोत्तर में सम्प्रेषण हेतु हिंदी का विशेष प्रयोग किया जाता है। कार्यक्रम का संचालन अतिथि अध्यापक श्री आकाश कुमार ने एवं धन्यवाद ज्ञापन पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. मयंक ने किया। अंत में राष्ट्रगान के साथ उद्घाटन कार्यक्रम समाप्त हुआ। कार्यक्रम में डॉ. मयंक, श्री आकाश कुमार, प्रतिभागी शिक्षकगण एवं अधिकारीगण उपस्थित थे।

इस नवीकरण पाठ्यक्रम में अध्यापन कार्य केंद्रीय हिंदी संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, सहायक प्रोफेसर डॉ. मयंक तथा अतिथि अध्यापक श्री आकाश कुमार द्वारा किया गया।

दिनांक 09-08-2025 को समापन समारोह आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, क्षेत्रीय निदेशक एवं संयोजक ने ऑनलाइन रूप से जुड़कर की। पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. मयंक ने 191वें नवीकरण पाठ्यक्रम का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इसके उपरांत मंचासीन अतिथियों द्वारा प्रतिभागियों

शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 1 का शेष...

हुआ। उत्साह और जज्बा को प्रदर्शित करती हुई प्रभात फेरी ने सभी को आकर्षित करने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि अपने 65 साल के इतिहास में भारतीय भाषाओं को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व कर रहे केंद्रीय हिंदी संस्थान ने आई.सी.सी.आर. और यू.जी. सी. की सूची में अपना नाम दर्ज कराया है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय हिंदी संस्थान को मानद विश्वविद्यालय का दर्जा मिलने से हमारे सपने ओर अधिक विस्तारित हो गए हैं। उन्होंने जानकारी दी कि भविष्य में शीघ्र ही 12 अन्य विभाग और चलने वाले हैं, जिससे विद्यार्थियों की संख्या 500 से बढ़कर 50,000 का आंकड़ा पार कर लेने की संभावना है। उन्होंने भरोसा जताया कि मानद विश्वविद्यालय के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान भारत सरकार के पैरामीटर पर खरा उतरने वाला पहला संस्थान होगा। यह देश के पटल पर अपनी एक अलग छवि प्रस्तुत करेगा। 1929 में पूर्ण स्वराज की माँग को याद करते हुए निदेशक ने बताया कि सर्वप्रथम लाहौर में तिरंगा फरहाया गया था, तब सारा देश खुशी से झुम उठा था। लेकिन यह खुशी स्थायी नहीं हो सकी। देश का बटवारा हो गया। विभाजन विभिषिका को याद करते हुए उन्होंने कहा कि हम भारतवासी अंखंड हैं हमारे भारत का सपना भी अंखड है। भारत एक ऐसा देश है जो अपने अधूरे सपने को पूरा करेगा। देश को स्वराज में परिवर्तित करने के लिए हमें कुर्बानी देने की आवश्यकता है। लोगों में समर्पण की भावना का संचार करते हुए उन्होंने कहा कि जब हम केवल वेतन के लिए नहीं बल्कि वतन के लिए कार्य करेंगे तभी हम अपने सपने का पूरा कर सकते हैं।

केंद्रीय शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि वर्ष 2025 का स्वतंत्रता दिवस समारोह संस्थान के इतिहास में एक अनोखा, उल्लासपूर्ण और उल्लेखनीय अवसर की तरह आया है। यह पहला अवसर है जब केंद्रीय हिंदी संस्थान मानद विश्वविद्यालय के रूप में दर्ज हो रहा है। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा 40-45 करोड़ की धन राशि संस्थान के शैक्षिक और प्रशासनिक भवनों के निर्माण तथा छात्रावासों को लिए प्राप्त हुई है। आवंटित धनराशि से संस्थान का आवश्यक ढाँचागत विस्तार सुनिश्चित किया जा सकेगा। वियतनाम की छात्रा के द्वारा सुनाएं गए गायत्री मंत्र की सराहना करते हुए प्रो. दुबे ने कहा कि यह मंत्र भारत की वृहद भूमिका एवं सनातम संस्कृति का प्रतीक है। उन्होंने यह भी कहा कि हमारे देश की 800 वर्षों की गुलामी सिंध से शुरू होती है लेकिन भारत की युवा शक्ति ने कभी पराजय को स्वीकार नहीं किया। बप्पारावल के नाम पर रावलपिंडी की स्थापना का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि देश को आजाद कराने के लिए खुदीराम बोस, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस आदि स्वतंत्रता सेनानियों की कुर्बानी देने की लंबी परंपरा रही है। हमें जो आजादी मिली है वह कुर्बानी, बलिदानों, आत्माहुति का प्रतिफल है। प्रो. दुबे ने उन्होंने विभाजन विभिषिका की चर्चा करते हुए बताया कि विभाजन किसी एक व्यक्ति का काम नहीं था बल्कि तीन ताकतें इसके लिए एक साथ काम कर रही थीं। मो. जिन्ना विभाजन का प्रचार कर रहे थे, कांग्रेस जिसने विभाजन को स्वीकार किया और माउंटवेटन जो विभाजन को लागू कराने के लिए ही भारत आए थे। ज्ञात हो कि वर्ष 1940 के लाहौर कांग्रेस में जिन्ना के प्रस्ताव को आधार बनाकर अंग्रेजों ने डोमेनियन स्टेटस देकर देश को एकजुट करने की कोशिश की थी किंतु कांग्रेस ने अस्वीकार कर दिया। बाद में शिमला के बंद कक्ष में भारत भूमि के नक्शा पर लाल कलम से रेखा खींची गयी जो भारतमाता का सीना चीरती हुई गयी जिसमें 40 लाख लोग मारे गए। इस विभाजन विभिषिका को हमें याद रखना है।

उन्होंने कहा कि संविधान ने हमें शिक्षा और संस्कृति जैसे मौलिक अधिकार दिए हैं। इन्हीं मौलिक अधिकारों के कारण भारत आज शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में नए कीर्तिमान और नये प्रतिमान स्थापित कर रहा है। इस अधिकार ने संस्थान को भी फलने फूलने का अधिकार प्रदान किया यह उपलब्धि पुराने और नये शिक्षकों के श्रम का प्रतिफल है।

संस्थान के कुलसचिव डॉ. अंकुश तुलसीराम औंधकर ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर स्वदेशी और विदेशी विद्यार्थियों द्वारा संयुक्त रूप मे रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गयीं। कार्यक्रम में अध्यापक शिक्षा विभाग के प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचारों को अभिव्यक्त किया। मंच संचालन डॉ. प्रणीता मिश्रा एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सरोज राय ने किया। कार्यक्रम के उपरांत मिष्ठान का वितरण किया गया। समारोह में संस्थान के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष और सभी शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्य शमिल हुए। कार्यक्रम का समापन वंदेमातरम के साथ हुआ।

पृष्ठ 1 का शेष...

पाठ्यक्रम में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे द्वारा हिंदी हिंदी भाषा की संरचना एवं भाषा तुलना प्रविधि पर विशेष व्याख्यान दिए गए। प्रो. सपना गुप्ता द्वारा शैक्षिक अध्ययन, डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी द्वारा भाषा विज्ञान, प्रो. उमापति दीक्षित द्वारा हिंदी भाषा एवं साहित्य का परिचय, डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी द्वारा भाषा विज्ञान तथा डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा अन्य भाषा हिंदी शिक्षण और हिंदी भाषा परिमार्जन की कक्षाएं ली गईं। प्रशिक्षणार्थियों ने अवकाश दिवसों में जयपुर, आगरा, फतेहपुर सीकरी, नई दिल्ली के स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों का शैक्षिक संदर्शन किया।

पाठ्यक्रम का समापन समारोह सरस्वती माँ की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ दिनांक 22.08.2025 को प्रो. हरिशंकर, शैक्षिक समन्वयक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में किया गया। उन्होंने मिजोरम से आये प्रशिक्षणार्थियों को अधिक मेहनत करने एवं आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाइट आईजोल मिजोरम से पधारी व्याख्याता सुश्री ललरिनत्वांगी छाड़. ते ने अध्यापकों द्वारा दिए गए प्रशिक्षण की सराहना की एवं आभार व्यक्त किया। तीन प्रशिक्षणार्थियों ने अपने अभिमत अनुभव मंच से साझा किए। साथ ही प्रशिक्षणार्थियों ने एक हिंदी समूह गीत एवं एक अंग्रेजी समूह गीत प्रस्तुत किए। पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष ने हिंदी के माध्यम से मिजोरम राज्य को अन्य राज्यों से जोड़ने की बात कही। तत्पश्चात नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. सपना गुप्ता ने अपने वक्तव्य में कहा कि, इन प्रशिक्षणार्थियों द्वारा ही अन्य राज्यों में हिंदी भाषा का प्रसार संभव है। इन प्रशिक्षणार्थियों के हिंदी सीखने में ही हिंदी के उज्जवल भविष्य की कामना के बीज अंतर्निहित हैं। अंत में, भविष्य की सुखद कामना करते हुए एवं आशीर्वचन देते हुए प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया तथा परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिखा माहेश्वरी, असिस्टेंट प्रोफेसर, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान द्वारा किया गया।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर केंद्रों पर आयोजित विभिन्न साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झाँकी

दिल्ली केंद्र पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत सहित केंद्र के समस्त शैक्षिक एवं प्रशासनिक वर्ग तथा अन्य सदस्य भी उपस्थित थे।

हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक ने ध्वजारोहण कर स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ दी।

गुवाहाटी केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. चंद्रशेखर चौबे द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर केंद्र के प्रशानिक सदस्य श्री जगत दास , श्री नयन डेका एवं श्रीमती सकीना बीवी उपस्थित थे।

भुवनेश्वर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास की उपस्थिति में समस्त अध्यापक, स्टॉफ एवं विद्यार्थियों ने हर्षोल्लास के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में संस्थान के मुख्यालय आगरा परिसर से निकली प्रभातफेरी में संस्थान कार्मिकों और विद्यार्थियों ने लिया हिस्सा।

ध्वजारोहण समारोह के उपरान्त केंद्र पर पदस्थ कार्मिकों का समूह चित्र।

शिलांग केंद्र पर ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर केंद्र पर पदस्थ असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मयंक, प्रशासनिक कर्मचारी-गण, सुरक्षा कर्मी उपस्थित थे।

मैसूर केंद्र पर ध्वजारोहण के बाद क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. रणजीत भारती ने सभी शैक्षिक सदस्यों एवं कर्मियों को संबोधित करते हुए 79वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ दी।

दिल्ली केंद्र का संदर्शन

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार में संयुक्त सचिव (भाषा) के पद पर आसीन श्रीमती मनमोहन कौर ने दिनांक 26 अगस्त, 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र दिल्ली का संदर्शन किया। केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे की उपस्थिति में क्षेत्रीय निदेशक दिल्ली केंद्र प्रो. अपर्णा सारस्वत ने सम्मानीया अतिथि को अंगवस्त्र ओढ़ाकर एवं उन्हें प्रतीक चिह्न भेंट कर उनका हार्दिक अभिनंदन किया।

पृष्ठ 6 का शेष...

को नवीकरण पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर प्रमाण-पत्र दिए गए।

साथ ही पर-परीक्षण में प्रथम, द्वितीय, एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को भी उत्साहवर्धन हेतु प्रमाण-पत्र एवं समन्वय पूर्वोत्तर पत्रिका दिए गए।

कार्यक्रम का संचालन प्रतिभागी अध्यापिका श्रीमती चुचिना के. मारक ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रतिभागी अध्यापक श्री केनेडी संगमा ने किया।

अर्थांतर

‘प्रकार’ और ‘तरह’

‘प्रकार’ संस्कृत का है और पुल्लिंग है। ‘तरह’ अरबी का है और स्त्रीलिंग है। इन का एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग कुछ उदाहरणों में हो सकता है और कुछ में नहीं, जिस का मतलब है कि ये शब्द कहीं समानार्थी हैं और कहीं भिन्नार्थी।

आइए, पहले समानार्थी प्रयोगों के उदाहरण देखते हैं- (1) संसार में चार प्रकार के बेवकूफ़ होते हैं (‘चार तरह के’ भी संभव)। (2) इस तरह वह मोटी हो गई (‘इस प्रकार’ भी संभव)।

अब भिन्नार्थी प्रयोगों के उदाहरण देखिए- (1) संसार में बेवकूफ़ों के चार प्रकार होते हैं। (यहाँ ‘प्रकार’ के स्थान पर ‘तरह’ का प्रयोग नहीं हो सकता)। (2) तुम उस की तरह मोटी नहीं हो (यहाँ ‘तरह’ का स्थान ‘प्रकार’ नहीं ले सकता)।

‘विभिन्न प्रकार के/की’ या ‘नाना प्रकार के/की’ के अर्थ में ‘तरह-तरह के/की’ चलता है, ‘प्रकार-प्रकार के/की’ नहीं चलता।

‘तरह’ से ‘तरहदार’ (विशेषण) बनता है (अर्थ-अच्छे प्रकार का)। ‘तरहदार’ से ‘तरहदारी’ (भाववाचक संज्ञा) भी बनता है (अर्थ-तरहदार होने का भाव)। ‘तरह’ से बने मुहावरे ‘तरह देना’ का अर्थ है ‘जान-बूझ कर उपेक्षा करना’। (उदाहरण- ‘डॉक्टर पराक्रम सिंह उसे दिन उस दिन राणा की बात को बड़ी चालाकी से तरह दे गए।’) ‘प्रकार’ इन सब ‘तरह’ से बहुत दूर है। प्रस्तुतिः अनिल तिवारी

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:
THE KENDRIYA
HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोटः 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।

2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name :
THE KENDRIYA HINDI SHIKH-SANA MANDAL
UPI ID : thekhsmagra@sbi

भाषाई संप्रभुता के लिए तकनीकी, वैज्ञानिक शब्दावली आवश्यक

"हिंदी भाषा सशक्त भारत की पहचान है। भारत की प्राचीन सनातनी भाषा संस्कृत को आधार बनाकर और तकनीकी शब्दावली का बड़े पैमाने पर प्रयोग कर इसके सर्वांगीण विकास की राह को प्रशस्त किया जाना चाहिए। वृहद भाषा मॉडल (एलएलएम) और कृत्रिम बुद्धिमता (ए आई) का बेहतर उपयोग करते हुए अनुवादिनी, भाषिनी, उड़ान जैसे अनुवाद उपकरणों के साथ-साथ विश्वविद्यालयों शिक्षण संस्थानों द्वारा विकसित टूल्स को आगे कर उच्च शिक्षा में हिंदी को सर्वसमावेशी बनाया जा सकता है और तभी हिंदी अंग्रेजी का स्थान ग्रहण कर सकती है।"

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अटल बिहारी वाजपेयी सभागार में गुरुवार, 28 अगस्त 2025 को 'पाणिनि व्याख्यान माला' के अंतर्गत 'हिंदी में तकनीक' विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर वरिष्ठ भाषाविद प्रो. गिरीश नाथ झा ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार साझा करते हुए हिंदी को सशक्त भारत की पहचान बताया और तकनीक के माध्यम से इसके सर्वांगीण विकास पर अपने गहन विचार साझा किए। प्रो. झा ने अपने व्याख्यान में हिंदी को संस्कृत आधारित, सशक्त और सर्वसमावेशी बनाने की वकालत करते हुए इसे उच्च शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दिया।

उन्होंने कहा कि भारत को अपनी भाषाई संप्रभुता सुनिश्चित करने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का निर्माण अत्यंत आवश्यक है। प्रख्यात भाषाविद ने वृहद भाषा मॉडल 'हिंदी एलएलएम (एलएलएम)' और भारत की अपनी कृत्रिम बुद्धि (एआई) के विकास की आवश्यकता पर बल दिया,साथ ही देश के अपने डेटा सेंटर होने की अनिवार्यता को भी रेखांकित किया। उन्होंने गूगल, बिंग जैसे अनुवाद उपकरणों के साथ-साथ विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित टूल्स और भारत सरकार के उपक्रमों जैसे अनुवादिनी, भाषिणी, उड़ान परियोजना आदि की भी चर्चा की।

प्रो. झा ने स्पष्ट किया कि कोई भी भाषा तब तक सशक्त नहीं होती है, जब तक उसमें रोजगार के अवसर न हों और इस संदर्भ में संस्कृत को आधार बनाना अधिक प्रायोगिक होगा। उन्होंने गृह मंत्रालय द्वारा बनाए गए टूल्स एवं कोशों की भी चर्चा की और बार-बार अनुवाद की ओर ध्यान आकृष्ट कराया।

प्रो. झा ने कहा कि उच्च शिक्षा में हिंदी को स्थापित करने के लिए वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली का निर्माण और शैक्षणिक सामग्री का निर्माण हिंदी में होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि समावेशी हिंदी ही अंग्रेजी का सर्वसमावेशी स्थान ले सकती है। उनके अनुसार से उच्च शिक्षा की भाषा हिंदी जैसी भारतीय भाषा होनी चाहिए, क्योंकि उच्च स्तरीय अंग्रेजी जानने वाले भारत में केवल 2-3 प्रतिशत लोग ही हैं। उन्होंने संस्कृत की वैदिकी (प्रशासन, शिक्षा, साहित्य और ज्ञान-विज्ञान) तथा लौकिकी (लोक संचार माध्यम, फिल्म, टीवी आदि) दोनों भाषाओं के अंतर को भी समझाया। अंत में उन्होंने हिंदी में शैक्षणिक सामग्री के लिखित और टाइपिंग दोनों रूपों में निर्माण की आवश्यकता जताई और चेतावनी दी कि अंग्रेजी को थोपने से देश का बहुत ह्रास हो रहा है।

"अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने भाषिक सुदृढ़ता के लिए प्रत्यक्ष प्रयास की आवश्यकता पर जोर देते हुए प्रौद्योगिकी के असाधारण प्रभाव को रेखांकित किया।"

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने प्रौद्योगिकी के असाधारण प्रभाव को रेखांकित किया। भाषिक सुदृढ़ता के लिए प्रत्यक्ष प्रयास की आवश्यकता पर भी बल देने की बात की और इस व्याख्यानमाला को सार्थक बताते हुए इस पहल को महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि यह व्याख्यानमाला ऐसे अनुत्तरित प्रश्नों का समाधान प्रदान करेगी, जिनकी जिज्ञासा बनी हुई है और इसे ई-कंटेंट के रूप में भी उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि भाषा ही हमें पशुओं से अलग करती है और हमें अपनी भाषाओं के प्रति गंभीर चिंतन की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आज मोबाइल में समाई हुई प्रौद्योगिकी स्वप्नवत चीजों को भी साकार कर रही है। प्रो. कुळकर्णी ने 1857 से 1947 तक अंग्रेजों द्वारा और उसके बाद से आज तक भारतीय भाषाओं के समक्ष खड़े संकट का जिक्र करते हुए भारतीय भाषाओं को नया जीवन और साँस देने के लिए अंग्रेजी से मुक्ति की बात कही। उन्होंने यह भी कहा कि हमें अपनी भाषाओं को जिंदा रखने के लिए मातृभाषा और राष्ट्रभाषा को जिलाए रखने का संकल्प लेना होगा।

इस व्याख्यानमाला का सफलतापूर्वक आयोजन अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया।

मंच संचालन डॉ. परमान सिंह ने अत्यंत कुशलता से किया। इस अवसर पर संस्थान के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, शैक्षिक समन्वयक, समस्त अध्यापक गण, विद्यार्थी एवं कर्मचारीगणों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अंत में डॉ. परमान सिंह ने उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहयोग
अनिल तिवारी

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं।
संस्थान समाचार का ई-मेल: sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।